Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
ISSN: 2347-2979
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024

अपुत्रयी: दो उपन्यास ; सत्यजित रे की तीन फिल्में

डॉ. सूर्यबोसश्रीरागम, कोट्टीयम पी.ओ, कोल्लम जिला, केरल

सत्यजित रे बीसवीं सदी के सर्वोत्तम फिल्म निर्देशकों में एक है .कला और साहित्य के लिए मशहूर कोलकत्ता में उनका जन्म हुआ .उन्होंने अपना करियर की शुरवात पेशेवर चित्रकार की तरह की .उन्होंने सैंतीस फिल्मों का निर्देशन किया ;जिनमें फीचर फिल्में ,वृत्तचित्र लघु फिल्में आदि भी शामिल है .इनका पहला फिल्म पथेर पांचाली को कान फिल्मोत्सव में सर्वोत्तम मानवीय प्रलेख पुरस्कार मिला .इसको मिलाकर कुल ग्यारह अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार मिले .

बंगला साहित्य और सत्यजित रे की फिल्मों में एक अनोखी तालमेल है .बचपन से ही उनकी रूचि फिल्मों की और रही .फिल्मों से संबंधित 'फिल्म गोवर ',' फोटो प्ले ' आदि पत्रिकाओं को वे उनके शब्दों में कहें तो –"निगलते रहते थे ".कालेज के वक्त उनका मन अभिनय से मुड़कर निर्देशन की और हो गया .इसके पीछे दो किताबों का प्रभाव दिखाई देता है .ये दोनों किताब पुद्वोकिन का लिखा हुआ था .

फ्रांसीसी निर्देशक जारेनोय से उनका परिचय होने के बाद उनके फिल्मों के संबंध में जार्नोय से ज्ञान प्राप्त करने लगे .फिल्म बनाने की तीव्र इच्छा इसी जार्नेव के कारण ही रे जी के मन में पैठ गया .रे जी ने सबसे पहले विभूति भूषण बंदोपाध्याय का "पथेर पांचाली" उपन्यास को फिल्म में बदलने की अपनी इच्छा उनसे ही प्रकट किया था .वे लीक से हटकर भारतीय पृष्ठभूमि में फिल्म बनाना चाहते थे .लोकेशन में जाकर अमेच्वर लोगो के साथ फिल्म बनाना ज्यादातर लोगों की राय में मुश्किल था .इसी समय उन्हें इतालवी फिल्म 'बैसिकिल थीव्स" देखने का मौक़ा मिला ."पथेर पांचाली" में वे क्या क्या करने का इरादा रखते थे ; उसे 'बैस्किल थीव्स' का निर्देशक डिसिका ने करके दिखाया था .इससे रे का हौसला बढ़ा .

उपन्यास को फिल्म में बदलते समय कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है .पटकथा बनाना सबसे पहले ज़रुरत है .रे के पास पटकथा के नाम पर सिर्फ नोट्स व स्केच थे .वे इससे तृप्त भी थे ,क्योंकि कहानी उनके मन में दृढ़ता पूर्वक चिपक गया थे.उपन्यास से ज़्यादा पात्रों को फिल्म में नहीं ले सकते .पुरोहित ठाकुर हरिहर राय ,उनका परिवार अर्थात पत्नी सर्वजया ,बेटी दुर्गा,बेटा अपु ,फिर उम्र के बोझ से झुकी दूर के रिश्तेदार बहन इंदिरा ठाकुरायिन इन लोगों को चुना .सिर्फ फिल्म केलिए जरूर चीजें उपन्यास से लिया गया .बाकी सभी प्रतीकों के ज़रिये दिखाने का निश्चय किया .उपन्यास में अपु के जन्म के तुरंत बाद इंदिरा ठाकुरायिन की मृत्यु होती है .फिल्म में

ISSN: 2347-2979

बांस –वन के बीच अपु और दुर्गा उनके लाश को देखता है .दोनों बच्चों को तभी मृत्यु की पहचान होती है .

दुर्गा की मृत्यु भी रे ने फिल्म में अलग तरीके से दिखाया है .तूफानी बारिश में दुर्गा जंगल के बीच ख़ुशी से झूमती हुयी दिखाई देती है .तूफ़ान के बाद न्यूमोनिया के कारण दुर्गा की मृत्यु होतीहै ;तूफानी बारिश में उसका नाचना मृत्यु का कारण बनता है,यही फिल्म में दिखाया है .दुर्गा की मृत्यु के तुरंत बाद ही फिल्म ख़तम होता है .खानदानी धरती छोड़कर हरिहर पत्नी और बेटे को लेकर काशी चलता है .

सत्यजित रे शहरों में पीला पढ़े थे .गाँव की घरों की ढंग कैसी होती है ;इसका परिचय उन्हें नहीं था .'पथेर पांचाली' के लिए जो लोकेशन चुना था वहां के लोगों से परिचित होने के बाद ;उनसे घुल मिल जाने के बाद वे इस विषय में माहिर हो गए .'पथेर पांचाली' फिल्म को कान फिल्मोत्सव में स्पेशल जूरी सम्मान मिला –"बेस्ट ह्युमन डोक्युमेंट " इसके बाद कई फिल्मोत्सवों में लगभग सम्मान मिले .

दूसरा फिल्म बनाने के बारे में सोच सोच कर अंत में विभूतिभूषण बंधोपाध्याय के 'अपराजितो' में अपु का जो पात्र है ;उसी पर फिल्म बनाने का निश्चय करता है .यहाँ भी सत्यजित रे को कई परेशानियों का सामना अक्रना पड़ता है .पांच – छह साल के अंतराल में दो अपु को दिखाना पड़ता है .इसकेलिए एक जैसा लगनेवाला भाईयों को मिलना मुश्किल था .जैसे तैसे दो बालकों को तय करता है . उनमें साम्य न था फिर भी काम चलाऊ था .

दूसरी समस्या लीला नामक पात्र का था .उपन्यास पाठकों के लिए वह प्रिय थी .उसे फिल्म से हटाया भी नहीं जा सकता था .कालेज में पढते वक्त कलकत्ते में अपु का परिचय लीला से होता है .दोनों मित्र बन जाते है .उपन्यास के पाठकों के हिसाब से लीला को रखना पड़ता था . लिकिन रे को ज़रा सा भी इच्छा नहीं थी .शूटिंग के समय दो दो पात्र लीला के किरदार केलिए आये और चले गए .तीसरी लड़की को ढूंढना रे नहीं चाहते थे .इसलिए लीला के पात्र को फिल्म से हटा देते है . उनको लगता है की लीला के पात्र को हटाये जाने पर ही फिल्म की गति में तेज़ी आ गयी.

' पथेर पांचाली 'के जैसा ही 'अपराजितो' में भी डॉ मृत्यु दिखाता है.उसका फिल्मीकरण कैसे किया जाता है,यह भी एक समस्या है .हरिहर अपने अन्तिम घाटियों गिन रहा है ;एक दिन बड़े सबेरे उसका बडबडाना सुनकर सर्वजया उठती है तो 'गंगा ' शब्द सुनाई पड़ता है . वह अपु के हाथ में लोटा दे कर गंगा जल लाने को कहती है.गंगा जल पीते ही हरिहर की मृत्यु हो जाती है.यहाँ रे जी ने गंगा घाट

Sampreshan
UGC CARE GROUP 1
https://sampreshan.info/
Vol. 17, Issue No. 2, June 2024
ISSN: 2347-2979

के झुण्ड में उड़ते कबूतरों को दिखाया है .'अपराजितो ' के प्रभावशाली दृश्यों में इसको गिनाया जाता है

अपु अकेले कोलकत्ता जाता है, पढने केलिए .कलकाता स्टेशन में पहली बार उतरती अपु की मानसिकता को दिखाना एक चुनौती था .अपु प्लेटफार्म में उतरता है .एक बड़ा सा सड़क पार करते ही बारिश होने लगती है .बारिश से बचने केलिए अपु एक कारपोर्च में खडा होता है .वहां खड़े खड़े वे कलकत्ता के मिश्रित संस्कार को देखता है .फ़ारसी भाषा में बात करते दो काबुलीवाला, दो चीनी लोग ,हिंदी में बात करते लोग सबको देख कर भौंचक कड़े अपु को हम फिल्म में देख सकते है .

'अपराजितो ' फिल्म में दूसरी मृत्यु सर्वजया की अहि .उम्र के बढ़ने के साथ अपु अपनी माँ से दूर होता है .शहर का आकर्षण ,वहां दोस्त का मिलना तथा प्रेस में काम मिल जाने के कारण वह सर्वजया के पास ज़्यादा आता - जाता नहीं था . सर्वजया अपने बेटे को देखने केलिए तड़पती रहती है .मृत्यु के कुछ क्षण पहले भी उसे लगता है कि अपु आ गया है .वह किसी तरह गिरती पड़ती दरवाज़ा खोलकर देखती है .घने अँधेरे में जुगनुओं के अलावा उसे कुछ दिखाई नहीं देता .इस दृश्य का यथावत चित्रण फिल्म में देखा जा सकता है . 'अपराजितो' फिल्म भी अंतर राष्ट्रीय तौर पर कई सम्मान हासिल किये .स्वर्ण सिंह ,क्रिटिक अवार्ड ,सिनेमानुवोवोवो सम्मान आदि इसमें प्रमुख है

अपु त्रयी का तीसरा फिल्म 'अपुर संसार ' भी 'अपराजितो 'उपन्यास से लिया गया है .बोक्स ऑफिस में उनके पिछले दो फिल्में हिट नहीं हुए थे .इसलिए वे साधारण लोगो के रूचि के हिसाब से 'अपुर संसार' बनाने का निश्चय करता है .उसका कथानक इस प्रकार है - अपु अपने दोस्त के साथ उसके मामाजी की बेटी की शादी में जाता है .मुहूर्त के वक्त मालूम होता है कि दुल्हा पागल है .उस लगन में लड़की की शादी नहीं हुयी तो लड़की लग्न भ्रष्ट कहलाएगी ;उसकी शादी कभी नहीं होगी .अपु उससे शादी करने के लिय तैयार हो जाता है .वे ख़ुशी से जीते है ;लेकिन बेटे को जन्म देते ही उसकी मृत्यु हो जाती है .अपु बच्चे को अपनाता नहीं और घर छोड़ कर चला जाता है .अंत एम् अपु का दोस्त उसे ढूंढ निकलता है और अपु अपने बेटे को स्वीकारता है

कहा जाता है ' थर्ड टाइम लक्की ' , वही हुआ .फिल्म हिट हुआ .राष्ट्रपति का स्वर्ण पथक मिला .कई दुसरे इनाम मिले .इसका नायक सुमित्र चट्टोपाध्याय बंगला का विख्यात नायक बना .नायिका शर्मिला टगोर बंबई गयी और हिंदी सिनेमा की सरताज बन गयी

ISSN: 2347-2979

विभूतीभूषण बंधोपाध्याय के उपन्यासों से सत्यजित रे ने तीन श्रेष्ठ दृश्य काव्यों का निर्माण किया . बंधोपाध्याय जी की पत्नी ने रे से कहा था कि "उन्होंने उपन्यासों के साथ न्याय किया है .अगर बन्धोपाद्ध्याय जी जीवित रहते तो वे भी कृतार्थ होते" .उपर्युक्त शब्दों से ही मालूम हो जाता है कि उपन्यासों ई सत्ता को सत्यजित रे ने किस खूबसूरती से फिल्माया है

Email: suryaranjith1977@gmail.com 9400496021 Mobile

सहायक ग्रन्थ

1.सत्यजित राय की कहानियाँ - सत्यजित राय ,राजकमल प्रकाशन,नयी दिल्ली २०१८

2. पथेर पांचाली फिल्म

3.अपराजितो फिल्म

4.दी वर्ल्ड ऑफ़ अप्पू